पटना शहर के माध्यमिक विद्यालयों के नवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं के समायोजन का निष्पत्ति पर प्रभाव : एक अध्ययन

डॉ० कुमारी सुनीता सिंह

प्राचार्या, मुंडेश्वरी कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, पटना

शोध सार

छात्रों में विपरीत परिस्थितियों में भी समायोजन करने की क्षमता तथा जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने की योग्यता छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ाती है। कई अध्ययन में पाया गया है कि अधिकतर आत्मविश्वास से पूर्ण छात्र शैक्षिक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करते हैं। प्रस्तुत लेख में समायोजन तथा निष्पत्ति के संबंध का अध्ययन है, इस अध्ययन का उद्देश्य छात्रों के समायोजन का निष्पत्ति पर प्रभाव जानना है। इसके लिए पटना के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक विज्ञान की निष्पत्ति स्तर पर समायोजन सार्थक रूप से प्रभावी नहीं है।

मुख्य शब्द - समायोजन, निष्पत्ति, माध्यमिक विद्यालय,आत्मविश्वास

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ इच्छाएँ, आवश्यकताएँ तथा आकांक्षाएँ होती है। वह इन्हीं को प्राप्त अथवा पूर्ण करने का निरन्तर प्रयास करता है। किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह सदैव ही इन आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को पूरा कर ही लें। कुछ व्यक्ति अपनी इन इच्छाओं व आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेते है और इस प्रकार वे अपने आप को समायोजित कर लेते है। लेकिन जो व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाते उनमें भग्नाषा, तनाव, द्वन्द, चिन्ता, शंका आदि मनोवेग उत्पन्न हो जाते है। जीवन में संतुष्टि और आनंद प्राप्ति का मार्ग समायोजन से होकर गुजरता है। समायोजन का अर्थ होता है कि आवश्यकता और मांगो से अपनी शक्ति और सामर्थ के सन्दर्भ में अनुकूलन कर के चलना। अत: जो इस प्रकार के मनोवैज्ञानिक अनुकूलन में जितना सामर्थ है उतना ही अच्छी तरह अपना जीवन जी सकता है। व्यक्ति का समायोजन क्षेत्र तीन भागों में बँटा है, पहला व्यक्तिगत समायोजन जो व्यक्तिगत आवश्यकताओं से सम्बंधित समायोजन है, दूसरा सामाजिक समायोजन जो परिवार पड़ोस एवं समुदाय से सम्बंधित समायोजन है और तीसरा व्यावसायिक समायोजन जो व्यवसाय सम्बंधित तथा कामकाज के क्षेत्र में समायोजन से सम्बंधित है। वहीं दूसरी तरफ व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के ज्ञान तथा कौशल को अर्जित करता है, इस ज्ञान तथा कौशल में व्यक्ति कितनी दक्षता प्राप्त की है इसका निर्धारण ज्ञान तथा निष्पत्ति परीक्षण से किया जाता है। विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए विधार्थी आते है। समान मानसिक योग्यता से संपन्न होने के कारण वे समय के एक ही अवधि में विभिन्न विषयों और कुशलताओं में विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं उसकी इसी निष्पत्ति का परीक्षण सभी प्रकार की शैक्षिक संस्थाओं में किया जाता है। निष्पत्ति परीक्षणों के द्वारा यह माप किया जाता है कि छात्रों ने कक्षा में पढ़ाये गये विषयों की पाठ्य वस्तु के सम्बन्ध में कितना सीखा है। इस प्रकार के परीक्षणों में सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु पर प्रश्न पूछे जाते हैं और सही उत्तरों के लिए अंक देकर उनका योग कर लिया जाता है, जिसे प्राप्तांक कहते हैं। इस प्रकार निष्पत्ति परीक्षण में पाठ्यवस्तु के सीखने को विशेष महत्व दिया जाता है। केलवीन रिचर्ड (2000) ने अमेरिका के पब्लिक स्कूल के उच्च सामाजिक आर्थिक वर्ग के बालक बालिकाओं में शैक्षिक समायोजन के अध्ययन में पाया कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में शैक्षिक समायोजन की क्षमता

अधिक होती है। वहीँ दूसरी तरफ लाउरा (1998) ने माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान की निष्पत्ति पर लिंग विभेद के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए अध्ययन किया तो पाया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में विज्ञान की निष्पत्ति स्तर पर लिंग विभेद का सार्थक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के वातावरण में छात्रों के समायोजन की स्थिति छात्रों के निष्पत्ति को किस प्रकार प्रभावित करती है, इस प्रभाव को जानने क लिए शोधकर्ता क द्वारा इस सम्बन्ध में अध्ययन करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्र-छात्राओं का सामजिक विज्ञान में निष्पत्ति का पता लगाना।
2. छात्र-छात्राओं में समायोजन का पता लगाना।
3. छात्र-छात्राओं का समायोजन एवं सामजिक विज्ञान में निष्पत्ति में सम्बन्ध का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ

1. छात्र-छात्राओं का लिंग के आधार पर सामाजिक विज्ञान की निष्पत्ति मी कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. छात्र-छात्राओं का लिंग के आधार पर समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्र-छात्राओं के समायोजन एवं सामाजिक विज्ञान की निष्पत्ति के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रतिदर्श-

पटना शहर के दो अराजकीयकृत माध्यमिक विद्यालय के 50-50 छात्रों एवं 50-50 छात्राओं का चयन किया गया तथा प्रतिदर्श की कुल संख्या 200 ली गई है।

तालिका- 1

विद्यालय के आधार पर प्रतिदर्श का वितरण

विद्यालय	छात्र-छत्राओं की संख्या
अराजकीयकृत विद्यालय ए0 पटना	100
अराजकीयकृत विद्यालय बी0 पटना	100
कुल	**200**

तालिका :- 2

चरों के आधार पर प्रतिदर्श का वितरण

चर	अनुक्रियाकर्त्ता	प्रतिशत
छात्रों की संख्या	80	40 प्रतिशत
छात्राओं की संख्या	120	60 प्रतिशत
कुल	**200**	**100 प्रतिशत**

अध्ययन विधि:

शोधकर्ता ने अध्ययन में सर्वेक्षण विधि से आंकड़ों का संग्रह किया एवं माध्य (डमंद), मानक-विचलन (ैक), क्राँतिक-अनुपात (ज.त्ंजपव) तथा अनोवा (थ) का प्रयोग आंकड़ों के मूल्यांकन करने के लिए किया है।

परिणाम एवं व्याख्या-

तालिका 3

छात्र-छात्राओं में लिंग के आधार पर समायोजन का स्तर

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	कार्तिक अनुपात
छात्र	80	10.92	2.11	0.89
छात्र	120	11.18	2.11	

आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि लिंग के आधार पर छात्र-छात्राओं के समायोजन का कार्तिक अनुपात (ज.त्ंजपव) 0.89 है, जो तालिका मूल्य (सार्थकता का मूल्य 1.97) से कम है। अत: लिंग का छात्र-छात्राओं के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका-4

छात्र- छात्राओं में लिंग के आधार पर निष्पत्ति का स्तर

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	कार्तिक अनुपात
छात्र	80	53.88	11.63	1.53
छात्रा	120	54.95	11.85	

आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि लिंग के आधार पर छात्र-छात्राओं के निष्पत्ति के स्तर का कार्तिक अनुपात (ज. त्ंजपव) 1.53 है, जो तालिका मूल्य (सार्थकता का मूल्य 1. 97) से कम है। अत: लिंग का छात्र -छात्राओं के निष्पत्ति के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

सभी आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि समायोजन और निष्पत्ति एक दूसरे पर निर्भर नहीं है। क्योंकि समायोजित व्यक्ति की भी निष्पत्ति निम्न हो सकती है। उच्च निष्पत्ति वाला व्यक्ति जरूरी नहीं कि पूर्णत: समायोजित हो

निष्कर्ष:

शोधकर्ता ने समायोजन एवं इतिहास में उपलब्धि का पता लगाने के लिए पटना ष्टाहर के विभिन्न माध्यमिक विद्यालय से आंकड़ो का संग्रह किया। शोधकर्त्ता यह जानने का प्रयास किया कि छात्र-छात्राओं के माता पिता की योग्यता, व्यवसाय, पारिवारिक आय आदि का प्रभाव समायोजन एवं निष्पत्ति पर पड़ता है या नहीं, साथ ही समायोजन एवं इतिहास में निष्पत्ति में सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है। अराजकीयकृत विद्यालय A के छात्र छात्राओं का परीक्षण किया जिसमें समायोजन का माध्यम 54.86 व प्रमाप विचलन 3.94 प्राप्त हुआ तथा B विद्यालय के अध्ययनरत छात्र छात्राओं का समायोजन 54.36 व प्रमाप विचलन 3.55 पाया गया। दोनों विद्यालयों के छात्र छात्राओं के समायोजन के माध्य में अंतर है। माध्य के इस अंतर की सार्थकता की गणना करने पर पाया गया कि मूल्य 0.05 है। अत: यह पाया गया कि दोनों विद्यालयों के छात्र छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। वहीं दूसरी तरफ अराजकीयकृत विद्यालय A के छात्र छात्राओं के इतिहास में निष्पत्ति के स्तर का माध्य 51.4 व प्रमाप विचलन 4.04 प्राप्त हुआ तथा B विद्यालय के छात्र छात्राओं के इतिहास में निष्पत्ति के स्तर का माध्य 54.78 व प्रमाप विचलन 2.99 प्राप्त हुआ। अत: सम्पूर्ण आंकड़ों का विश्लेषण करने के बाद पाया गया कि छात्र छात्राओं के समायोजन का छात्र छात्राओं के इतिहास में निष्पत्ति पर सार्थक रूप से प्रभाव नहीं पड़ता है। शोधकर्त्ता के परामर्श अनुसार प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में परामर्शदाता की नियुक्ति होनी चाहिए जो छात्र-छात्राओं में व्यवसायिक समायोजन के लिए आवश्यक मार्गदर्शन कर सके तथा इतिहास के प्रति छात्र- छात्राओं में रूचि विकसित करने के लिए समय-समय पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम के साथ साथ संगोष्ठी का आयोजन किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. गुप्ता, एस के, एवं वाजपेयी, सुनील (1996) आदिवासी एवं सामान्य हाई स्कूल के बालकों के व्यक्तिगत प्रतिमानो के सन्दर्भ में समायोजनात्मक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
2. चौधरी, कमलेश कुमार (1998) मुकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के समायोजन का अध्ययन भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
3. बेकस, रोजवेल्ट, जेम्स (1939), जिले के शहरी विद्यालयों के छात्रों में कला के छात्रों पर विज्ञान निष्पत्ति का अध्ययन International General of Psychology, 1990, Vol-3